Postal Regn. - RTK/010/2020-22
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र | फरवरी 2020 (प्रथम)

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन विशेषांक

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन के मुख्यातिथि माननीय श्री मनोहरलाल जी महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए साथ में मंच पर विराजमान हैं महामहिम राज्यपाल गुजरात आचार्य देवव्रत जी व अन्य।

Email : aryapsharyana@yahoo.in | कृण्वन्तो विश्वमार्यम् | Visit us : www.apsharyana.org

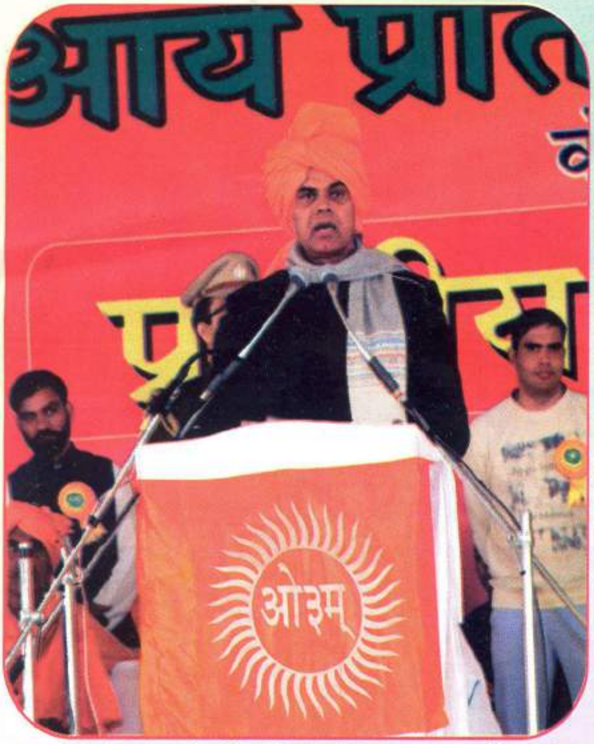

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए महामहिम राज्यपाल गुजरात आचार्य देवव्रत जी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए माननीय मुख्यमंत्री हरियाणा श्री मनोहरलाल जी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में यज्ञ करवाते हुए यज्ञ ब्रह्मा डॉ० सुरेन्द्र कुमार संस्कृत विभागाध्यक्ष एम. डी. यू. रोहतक एवम् यज्ञवेदी पर विराजमान विशिष्ट यजमान।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,120
विक्रम संवत् 2076
दयानन्दाब्द 196

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 15 अंक 23

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

फरवरी, 2020 (प्रथम)

1 से 15 फरवरी, 2020 तक

इस अंक में....

1. पूज्य आचार्य बलदेव जी के स्मृति दिवस पर आयोजित प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में उमड़ी भारी भीड़ 2
2. जिज्ञासा-विमर्श (सृष्टि विषय) 5
3. जहाँ ज्ञानी बुद्धिमान होते हैं, वहाँ स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त होता है 7
4. आवाज दो आर्य एक हों 9
5. आत्मबोध ही आत्मसुख का मार्ग है 10
6. ईश्वर ने संसार की रचना क्यों की ? 12
7. सोया स्वाभिमान जगाया था 14
8. समाचार-प्रभाग 15

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

—सम्पादक

पूज्य आचार्य बलदेव जी के स्मृति दिवस पर आयोजित प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में उमड़ी भारी भीड़

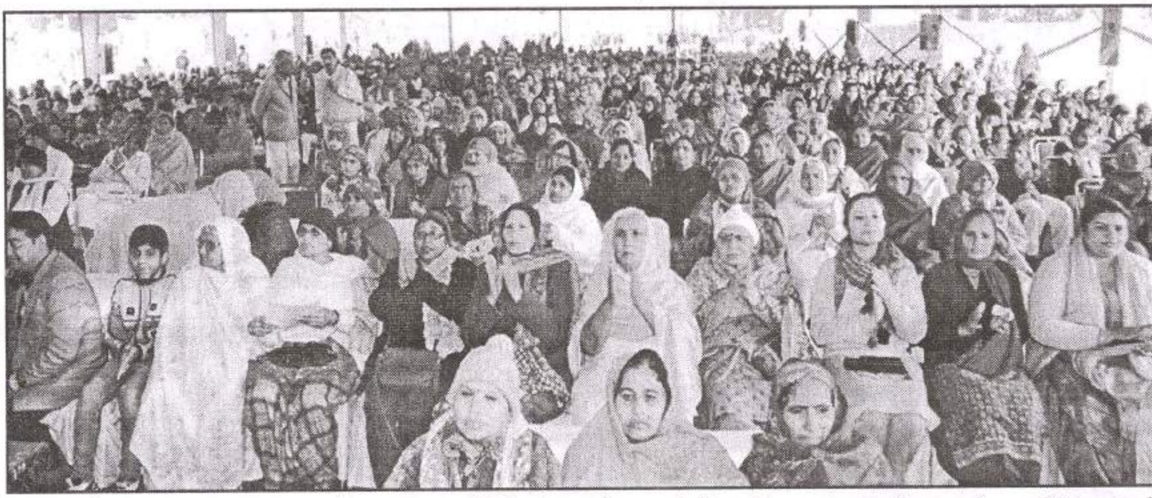

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में दिनांक 2.2.2020 को पूज्य आचार्य बलदेव जी के स्मृति दिवस पर प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन दयानन्दमठ रोहतक में किया गया। इस आर्य महासम्मेलन में पूरे प्रदेश से होडल व पलवल से लेकर कालका व डबवाली तथा नारनौल सभी जगह से हजारों की संख्या में आर्यजनों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता गुजरात के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने की तथा बतौर मुख्य अतिथि हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री मनोहरलाल जी शामिल हुए। महासम्मेलन में संन्यासियों, उच्च कोटि के विद्वानों तथा हरियाणा के लगभग सभी गुरुकुलों के आचार्यों ने मंच की शोभा को बढ़ाया। मंच का संचालन श्री उमेद शर्मा मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने किया।

आर्यसमाज एक आन्दोलन–मुख्यमन्त्री ने आचार्य बलदेव जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि वे एक महान् समाज सुधारक व गोभक्त थे। उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। महासम्मेलन को सम्बोधित करते महामहिम ने कहा कि आर्यसमाज एक आन्दोलन है। सरकार भौतिक विकास कर सकती है, लेकिन मानव निर्माण का कार्य आर्यसमाज जैसी संस्थाएं ही कर सकती हैं। आर्यसमाज का अतुलनीय योगदान है। युवाओं को नशे से दूर करने के लिए हमारी सरकार ने गांव में शराबबन्दी के लिए अलग से नियम बनाया। गांव के 10 प्रतिशत लोग प्रस्ताव पास करके भेजेंगे तो उस गांव में शराब का ठेका नहीं खुलेगा। उसके रिजल्ट भी आयेंगे। कुछ लोगों ने कहा कि रेवेन्यू कम हो जाएगा। हम कहते हैं कि जिन लोगों के लिए रेवेन्यू है, वे ही नहीं रहेंगे तो आमदनी क्या करेंगे। हमारी दो सड़कें कम बन जाएंगी, लेकिन युवाओं को नशे में नहीं धकेला जा सकता।

स्वामी दयानन्द जयन्ती विधानसभा में चर्चा–मुख्यमन्त्री मनोहरलाल ने कहा कि महापुरुषों की जयन्ती पर छुट्टी का प्रचलन था, लेकिन हमने इसे बदला। जब किन्हीं महापुरुषों की जयन्ती पर ऐच्छिक

अवकाश का नियम ज्यों का त्यों है, लेकिन छुट्टी लेकर उन महापुरुषों के विचारों को बढाएं तो छुट्टी का सही उपयोग होगा, परन्तु ऐसा होता नहीं। हमने उस दिन स्वामी दयानन्द जी के विचारों पर चर्चा हो इसलिए स्कूलों तथा अन्य संस्थाओं को निर्देश दे दिए हैं तथा 18 फरवरी को उनके जन्म दिवस पर हरियाणा विधानसभा में स्वामी दयानन्द सरस्वती की जयन्ती पर मन्त्री, विधायकों के साथ उनके विचारों पर चर्चा होगी। मुख्यमन्त्री की तरफ से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को 21,00,000 (इक्कीस लाख) रुपये की राशि देने की घोषणा भी की गई।

जीरो बजट खेती से किसानों की आय दुगनी हो सकती है-आर्य महासम्मेलन में उमड़ी आर्यों की भीड़ को सम्बोधित करते हुए गुजरात के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि आचार्य बलदेव जी ने अपना पूरा जीवन गायों की सेवा और विद्वानों को तैयार करने में लगा दिया। उनके जीवन से हम आज प्रेरणा लेकर जायें, यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

उन्होंने कहा कि जीरो बजट खेती को अब हरयाणा में आन्दोलन के तौर पर आगाज करना होगा तभी किसानों की आय दुगनी हो सकेगी। गुजरात राज्यपाल की पहल पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र में एक अप्रैल से पांच अप्रैल तक पांच हजार किसानों को जीरो बजट खेती के लिए विशेष प्रशिक्षण देने के लिए पद्मश्री सुभाष पालेकर आयेंगे। सुभाष पालेकर जीरो बजट खेती के विशेषज्ञ हैं। भारतीय देशी नस्ल की गायों से जीरो बजट खेती करने के बारे में बताया जाएगा।

उन्होंने गुरुकुल कुरुक्षेत्र का उदाहरण देते हुए बताया कि गुरुकुल की 200 एकड़ जमीन में हमने जहरमुक्त खेती की। अपने अनुभव साझा करते हुए कि सिर्फ प्रति एकड़ 500 रुपये लागत आई और धान का उत्पादन 32 क्विंटल प्रति एकड़ हुआ। जबकि कैमिकल से 12 से 14 हजार प्रति एकड़ तक खर्च आया और धान का उत्पादन सिर्फ 22 से 27 क्विंटल प्रति एकड़ हुआ। उन्होंने यह भी कहा कि गाय तभी बचेंगी जब गांव-गांव के खूंटे पर गाय बधेंगी। जब उन्हें मालूम होगा कि एक देशी दस्ल की गाय से 30 एकड़ जमीन की खेती की जा सकती है। महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने वेदप्रचार के लिए यदि और साधनों की आवश्कता पर गुरुकुल वेदप्रचार के बजट से और भी वेदप्रचार रथ दिये जा सकने की बात कही और कुरुक्षेत्र की ओर से 10,00,000 (दस लाख) रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को देने की घोषणा की।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान मा० रामपाल आर्य ने आर्य महासम्मेलन में पधारे सभी अतिथियों व महासम्मेलन में उमड़ी आर्यों की भारी भीड़ का आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से स्वागत किया। उन्होंने इस महासम्मेलन में उन भावी योजनाओं को अगले तीन वर्ष में क्रियान्वित किया जाएगा। सभाप्रधान ने प्रस्ताव रखकर सभी आर्यों से समर्थन मांगा, जिनमें प्रमुख—

1. **'वेदों की ओर लौटो'** अभियान को गति देने के लिए वेदों का प्रचार-प्रसार पूरे प्रदेश में युद्ध स्तर पर किया जाएगा।
2. संगठन को सुदृढ़ बनाने के प्रयास व गाँव-गाँव में आर्यसमाजों का विस्तार करना।
3. आर्यसमाज की खुर्द-बुर्द हुई सम्पत्तियों को वापिस आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में लाने के लिए सभी प्रकार के प्रयास किये जायेंगे।
4. आर्य वीर दल के शिविरों के माध्यम से युवक व युवतियों को आर्यसमाज से जोड़ा जाएगा।
5. शराबबन्दी व अन्य नशों से मुक्ति दिलाने का अभियान चलाया जाएगा। गांव-गांव जाकर शराब के ठेके बन्द करवाने की मुहिम पूरे प्रदेश में चलाई जाएगी।

6. हिन्दी व संस्कृत को बढ़ावा देने में गम्भीरता अपनाई जाएगी।
7. आर्य प्रतिनिधि सभा को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

सभाप्रधान ने अनुच्छेद 370 व सी.ए.ए. (नागरिकता संशोधन कानून) के समर्थन का प्रस्ताव रखा तो आर्य महासम्मेलन में उपस्थित हजारों की संख्या में पधारे आर्यजनों ने दोनों हाथ खड़े करके उसका समर्थन किया।

सरकार द्वारा गांव की 10 प्रतिशत संख्या द्वारा शराब का ठेका गांव में न खोलने के निर्णय का आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा व आर्य महासम्मेलन में पधारे आर्यों ने हरयाणा सरकार के फैसले का समर्थन किया और सभी आर्यों को गांव-गांव जाकर शराब के ठेके के विरुद्ध प्रस्ताव पास करवाने का आह्वान किया।

सभाप्रधान ने बताया कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्णय अनुसार प्रतिवर्ष स्मृति दिवस पर एक संन्यासी व एक आचार्य बलदेव जी के शिष्य को सम्मानित करने की परम्परानुसार स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, जिन्होंने अपने पूरा जीवन लगाकर 6, 7 गुरुकुल खोले तथा दूसरा आचार्य बलदेव जी के परमशिष्य डॉ० आचार्य यज्ञदेव याज्ञिक को आचार्य बलदेव स्मृति दिवस पर सम्मानित किया गया।

ये रहे मौजूद-इस अवसर पर मा० रामपाल आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री कन्हैयालाल आर्य उपप्रधान, सभा-कोषाध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा आर्या रोहतक, डॉ० सुरेन्द्र कुमार परोपकारिणी सभा अजमेर, श्री धर्मपाल आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री विनय आर्य मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभां दिल्ली, आचार्य सोमदेव मलारना चौड़ जिला सवाई माधोपुर राजस्थान, डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी क्षेत्रीय निदेशक, डी.ए.वी. दिल्ली जोन, डॉ० सुरेन्द्र कुमार संस्कृत विभागाध्यक्ष महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, आचार्य हरिदत्त गुरुकुल भैयापुर लाढौत रोहतक, आचार्य वेदमित्र रोहतक, डॉ. प्रमोद योगार्थी हिसार, आचार्य ऋषिपाल गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद, आचार्य वेदनिष्ठ गुरुकुल जूआँ (सोनीपत), आचार्य सर्वमित्र आर्य, स्वामी देवव्रत अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य वीर दल, स्वामी विदेहयोगी कुरुक्षेत्र, स्वामी पूर्णानन्द, (स्वामी धर्मदेव पिल्लूखेड़ा (जीन्द,) स्वामी सोमानन्द रोजड़ (गुजरात), स्वामी सुखानन्द फतुही (राजस्थान), स्वामी राजनाथ (भिवानी) वैद्य दयानन्द गिरि (भिवानी), आचार्या राजबाला गुरुकुल मोरमाजरा (करनाल), अमरकौर, अशोक पाराशर, अशोक कुमार आट्टा (पानीपत), श्री कमलसिंह आर्य, श्री जगदीश सींवर, श्री देवदत्त आर्य, श्री ब्रह्मदेव आर्य, श्री रघवीर सिंह, रमेश आर्य, रामकुमार आर्य, वीरेन्द्र आर्य, श्री सुभाषचन्द्र सिंघल, श्री सोमनाथ कैथल, सतीश कुमार बंसल यमुनानगर, नरवीरलाल चौधरी, देशबन्धु आर्य, डॉ. जगदीश प्रधान गोशाला संघ, डॉ० गेंदाराम, श्री सुरेन्द्र शास्त्री गोहाना सोनीपत, श्री इन्द्रलाल शास्त्री महेन्द्रगढ़, श्री हरदयाल महेन्द्रगढ़, श्री प्रमोद आर्य करनाल, श्री सत्यवान आर्य, श्री मनजीत श्योराण, श्री जयवीर आर्य, श्री कुलदीप आर्य आदि उपस्थित थे।

जिज्ञासा-विमर्श (सृष्टि विषय)

❑ आचार्य सोमदेव, मलार्ना चौड़, सवाईमाधोपुर (राज०)

गतांक से आगे...

जिज्ञासा-2. आर्यसमाज, राजेन्द्रनगर, दिल्ली-60 के मंच से एक विद्वान् पुरोहित ने सृष्टि प्रारम्भ तिथि परम्परागत

मान्यतानुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा बताया, किन्तु इस पर गणित ज्योतिष के जिक्र के अतिरिक्त कोई अन्य वैदिक या शास्त्रीय प्रमाण नहीं दिया और साथ ही वर्तमान नवरात्रि पर्व जो पौराणिकों द्वारा विशेष रूप से मनाया जाता है, उसे भी वैदिक परम्परा से जोड़ दिया। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में भी इस उक्त तिथि का जिक्र मुझे नहीं मिला। इस पर मेरी जिज्ञासा है—

मनुष्योत्पत्ति से पूर्व विज्ञान कहता है कि प्रथम जड़ सृष्टि जैसे ब्रह्माण्ड के पिण्डों का निर्माण हुआ। फिर पृथिवी इस लायक बनायी गयी, जिस पर जीव-जन्तु और मनुष्य रह सके। इस सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया क्रमशः उत्तरोत्तर काल में सम्पन्न हुई। इनमें से किसका कार्य प्रथम प्रारम्भ किया गया? क्या इसका प्रमाण होते ही प्रकृति के मूल-तत्त्व में प्रकम्पन से या फिर पृथिवी या पशु-पक्षी या फिर मनुष्योत्पत्ति काल से इस तिथि को जोड़ा जाय? क्रमशः निर्माण प्रक्रिया का ज्ञान होता है। ज्योतिष के हिमाद्रि ग्रन्थ में लिखा है—चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि...। इससे भी यह स्पष्ट नहीं होता है कि किस जगत्, जड़ या चेतन जगत् की रचना उक्त तिथि पर प्रारम्भ हुई? कृपया स्पष्ट करें।

—डॉ. एल.पी. शास्त्री, ई-15, एम.आई.जी. फ्लैट, प्रसाद नगर-II, नई दिल्ली-5

समाधान-सृष्टि प्रारम्भ का काल चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से माना जाता है। यह काल सृष्टि के सम्पूर्ण रूप से प्रकाश में आने के बाद अर्थात् मनुष्य उत्पत्ति के बाद माना जाना चाहिए, यही युक्ति से व प्रमाण से ज्ञात हो रहा है। युक्ति तो यह है कि काल गणना मनुष्य से ही संभव है। मनुष्य जब उत्पन्न हुआ तब से काल गणना भी प्रारम्भ हुई। जैसे अब वर्तमान में वर्ष का आरम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मानते हैं, वैसे ही सृष्टि का प्रथम वर्ष भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मानना चाहिए। इसमें हमें जो शास्त्र प्रमाण मिले हैं, वे हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं (सृष्टि उत्पत्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से)।

1. **लंकानगर्यामुदयाच्च भानोस्तस्यैव वारं प्रथमं बभूव।**
   मधोः सितोदेर्दिनमासवर्षयुगादिकानां युगपत्प्रवृत्तिः॥
   (सिद्धान्त शिरोमणि, मध्य. 15)

अर्थात् लंका नगरी में सूर्य उदय होने पर उसी के वार अर्थात् आदित्यवार में चैत्र मास शुक्ल पक्ष के प्रारम्भ में दिन, मास, वर्ष, युग आदि प्रारम्भ हुए। इसी आशय को लेकर अन्य श्लोक भी हैं—

2. **चैत्रासितादेरुदयाद् भानोर्दिनमासवर्षयुगकतयाः।**
   सृष्ट्यादौ लंकायां समं प्रवृत्ता दिनेऽर्कस्थ॥
   (ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त, अ.1)
3. **मधुसितप्रतिपद्दिवासादितो रविदिने दिनमासयुगादयः।**
   दशसिरः पुरि सूर्यसमुद्गमत् सममयी भवसृष्टिमुखेऽभवन्॥
   (सिद्धान्त शेखर, अ.1 श्लो. 10)
4. **चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।**
   शुक्लपक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति॥
   (हिमाद्रि ग्रन्थ)

इसी आशय से युक्त श्लोक विष्णुधर्मोत्तर पुराण-ब्रह्मसिद्धान्त में भी है—

5. **लंकायामर्कोदये चैत्रशुक्लप्रतिपदारम्भेऽर्कदिनादा-**
   वश्विन्यादौ किंस्तुघ्नादौ रोद्रादौ कालवृत्तिः॥

इन श्लोकों में लंका नगरी का कथन आया है, इसका आशय हम भी नहीं समझ पाये, किन्तु यह अवश्य स्पष्ट हो रहा है कि सृष्टि का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से हुआ है। यह मानवोत्पत्ति से लेना चाहिए, परम्परा से ऐसा ही चला आ रहा है।

जिज्ञासा-3. महर्षि दयानन्द जी ने जो सृष्टि उत्पत्ति का काल एक अरब 96 करोड़ वर्ष पूर्व बताया है, उन्होंने इस अवधि का निर्धारण किस आधार पर किया?

—प्रो० अरविन्द विग

समाधान-महर्षि दयानन्द का सृष्टि उत्पत्ति कालगणना का आधार उस समय के पंचांग, सूर्य सिद्धान्त आदि ग्रन्थ

और श्रुति परम्परा है। महर्षि ने इस बात को ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदोत्पत्ति विषय में अच्छी तरह स्पष्ट किया है।

जिज्ञासा-4. (क) इस सृष्टि की उत्पत्ति हुए 1,96,08,53,115 वर्ष हो गये हैं, लेकिन 'मानव' की उत्पत्ति हुए कितने वर्ष हुए हैं?

(ख) मानव की उत्पत्ति के पूर्व पशु, पक्षी, जलचर, वनस्पति, खाद्य पदार्थों आदि की उत्पत्ति हो गई थी या नहीं? अर्थात् इनकी उत्पत्ति कब हुई?

—मानवता, 194, तीसरी मंजिल, पार्श्वनार्थ नगर, सांगानेर अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, जयपुर

समाधान-(क) इस विषय में आर्यजगत् की पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर लेख आते रहे हैं, आते रहते हैं। यह जो समय है वह वेदोत्पत्ति व मानवोत्पत्ति का ही है। मानव सृष्टि की उत्पत्ति को महर्षि सृष्टि उत्पत्ति कहा है और यही काल वेदोत्पत्ति का है। वेद की आवश्यकता मनुष्य के लिए है, पशु, पक्षी या जड़ जगत् के लिए नहीं। ब्रह्मदिन का आरम्भ तो उसी दिन हो जाता है, जबसे परमाणुओं का संयोग विशेष प्रारम्भ होता है, किन्तु व्यावहारिक संवत् मानवोत्पत्ति से आरम्भ होता है। सृष्टि उत्पत्ति की प्रक्रिया आरम्भ होने के पश्चात् मानवोत्पत्ति होने तक पर्याप्त समय लगा होगा। सृष्टि रचना का वर्णन करते हुए महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश समुल्लास 9 में लिखा है, ''परमसूक्ष्म तत्त्वों का प्रथम ही जो संयोगारम्भ है, संयोग विशेषों से अवस्थान्तर दूसरी अवस्था को, **सूक्ष्म से स्थूल-स्थूल बनते-बनते विचित्र रूप बनी है।** इसी से यह संसर्ग होने से सृष्टि कहलाती है।''**'बनते-बनते बनी'** इन शब्दों से स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द के मत में यह विराट, विचित्र तथा वैविध्यपूर्ण सृष्टि मुसलमानों के अनुसार **'कुन' (होजा) शब्द का उच्चारण होते ही पलभर में बनकर खड़ी नहीं हुई।**

जैवी सृष्टि से पूर्व जीव के लिए अपेक्षित सामग्री का होना आवश्यक था। महर्षि ने इसका संकेत सत्यार्थप्रकाश समुल्लास 9 में किया है, ''मनुष्य की सृष्टि पहले हुई या पृथिवी आदि की?'' इस प्रश्न के उत्तर में ऋषिवर लिखते हैं, ''पृथिवी आदि की, क्योंकि पृथिवी आदि के बिना मनुष्य की स्थिति और पालन नहीं हो सकता।'' जबसे मनुष्य उत्पत्ति हुई है, तभी से कालगणना का आरम्भ हुआ है। मनुष्य के बिना अन्य कोई प्राणी कालगणना नहीं कर सकता, इसलिए यह 1,96,08,53,115 वर्ष वाली कालगणना मानव सृष्टि उत्पत्ति व वेद उत्पत्ति की है।

इस सन्दर्भ में महर्षि ने लिखा कि ''जो सृष्टि की उत्पत्ति से लेके आज पर्यन्त दिन-दिन गिनते और क्षण से लेके कल्पान्त की गणितविद्या को प्रसिद्ध करते चले आते हैं अर्थात् परम्परा से सुनते-सुनाते, लिखते-लिखाते और पढ़ते-पढ़ाते आज पर्यन्त हम लोग चले आते हैं।''

(ख) मानव की उत्पत्ति से पहले पशु, पक्षी, जलचर, वनस्पति, खाद्यपदार्थ आदि उत्पन्न हो गये थे, क्योंकि इनके बिना मानव जीवन चलना असम्भव है, इसलिए ये सब मानव उत्पत्ति से पूर्व उत्पन्न हो गये थे। मानव उत्पत्ति को सृष्टि रचना की सबसे बाद की रचना कह सकते हैं। प्राणी के प्रदुर्भाव से पूर्व इस धरती पर वायु, जल, लता, औषधि, वनस्पति, फल-मूल आदि खाद्य पदार्थ तथा सूर्य, चन्द्रमा अन्य आवश्यक साधन उपलब्ध थे। इनके बिना प्राणिमात्र का धरती पर रहना सम्भव न था। यजु० 31.6 के अनुसार—

सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।

अर्थात् परमेश्वर ने पहले दध्यादि भोग्य पदार्थों तथा वायु में गमन करने वाले पक्षियों, सिंह-व्याघ्रादि वनैले पशुओं और नगरों तथा गाँवों में रहने वाले गाय, घोड़े आदि पशुओं को उत्पन्न किया। इस प्रकार जड़ जगत् की रचना पूर्ण होने पर चेतन जगत् की और चेतन जगत् में भी क्रमशः सृष्टि हुई। सबके अन्त में मानव उत्पत्ति हुई। इस प्रकार पशु-पक्षी आदि की उत्पत्ति, सृष्टि रचना के प्रथम परमाणु के संयोगारम्भ से लेकर मानवोत्पत्ति के बीच का जो काल है, उसमें हुई।

क्रमशः अगले अंक में...

भूल-सुधार

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका के वर्ष 15 अंक 19 दिसम्बर 2019 प्रथम अंक में पृष्ठ 11 पर **'तप, त्याग, विद्या, बल और सहिष्णुता का रूप स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज'** के लेख में भूलवश स्वामी श्रद्धानन्द जी का फोटो छप गया है, जबकि इस पृष्ठ पर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का फोटो छपना चाहिए था। इस असुविधा के लिए हमें खेद है।

—सम्पादक

जहाँ ज्ञानी बुद्धिमान् होते हैं, वहाँ स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त होता है

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

स्वयं परमपिता परमात्मा ने मानवी-सृष्टि के प्रारम्भ में जो मूल उपहार मानव मात्र को दिया है-वह वेद है। वेद अर्थात् ज्ञान। वेद का संदेश है 'मनुर्भव'=मनु बन=ज्ञानी बन। (मनु अवबोधने) मनुः का अर्थ है ज्ञानी, मननशील। परमात्मा जब भी हमें कुछ देता है तो वह ज्ञान-प्रज्ञा-विवेक

देता है। इसीलिए तो परमात्मा के 'भक्त'-ज्ञानी-ध्यानी विवेकी कहे जाते हैं। गीता 4/38 में कहा है—

'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते'

(इह, ज्ञानेन, सदृशम्) इस संसार में ज्ञान के समान (पवित्रम्, हि, न, विद्यते) पवित्र करने वाला निःसन्देह कुछ भी नहीं है, परन्तु यह ज्ञान उपदेश से नहीं मिलता। जब मनुष्य कर्मयोग में पवित्र होकर अपने आपको आहुत कर देता है, उसे ही इस ज्ञान की पवित्रता का साक्षात्कार हो जाता है और बड़े से बड़ा पापी भी इस मार्ग पर चलकर अपने अन्दर एक चमत्कार पाता है। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती और भक्त अमीचन्द इसके स्पष्ट उदाहरण हैं, जिन्होंने किसी समय पतनगामी होते हुए भी पवित्र ज्ञान के प्राप्त होने पर सर्वजनहिताय के लिए अपना जीवन आहुत कर दिया।

जो कुछ भी हम मन के द्वारा जानते हैं, वह केवल जानकारी है, ज्ञान नहीं है। जानकारी कभी भी स्थायी नहीं होती, वह निरन्तर परिवर्तित होती रहती है। विज्ञान के सिद्धान्त भी व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी हो सकते हैं, क्योंकि उनका निर्माण मनुष्य ने किया है, परन्तु उसे भी आप ज्ञान नहीं कह सकते। सच्चा ज्ञान वह है जहाँ मनुष्य अपनी व्यक्तिगत दृष्टि से ऊपर उठकर समष्टि के साथ तादात्म्य अनुभव करते हुए साक्षात्कार करता है, परन्तु वह ज्ञान कुछ ही दिनों में प्राप्त नहीं किया जा सकता इसके लिए सतत साधना तथा धैर्य आवश्यक है।

सच्चिदानन्द परमेश्वर का संग-साथ न हो तो जीवन भर दुःख संतापों से घिरे-हम रोते ही रहते हैं। जिसने परमपिता परमात्मा का वरण कर लिया, जिसने परमदेव के दिव्य तेज को धारण कर लिया, वह सदा ही सत्य-अहिंसा, प्रेम के पावन कुञ्जों में बसता है। वह स्वयं सदा प्रसन्न रहता है और दूसरों को प्रसन्नता बांटता है। संस्कृत में प्रसन्नता के लिए जो शब्द है-वह है 'प्रसाद'। प्रसाद बांटने का अर्थ है-प्रसन्नता बांटना। जो दुःखी है, वह प्रसाद नहीं, विषाद बांटता है और जो सुखी है वह प्रसाद बांटता है। परमात्मा के दिव्य तेज को धारण करने वाला प्रतिपल-प्रतिक्षण-श्रेष्ठतम गुण-कर्म-स्वभाव को ही अपनाता है। दूसरों के दोष अवगुण देखने की प्रवृत्ति छूट जाती है। वह सतत भद्र ही देखता है, भद्र ही सुनता है, भद्र ही बोलता है। वह प्रयत्न-पुरुषार्थ से कभी आलस्य, प्रमाद नहीं करता। वह प्रतिपल कमर कसकर तैयार रहता है।

वह परमात्मा 'सविता' है, जगत् रचयिता है। कण-कण में उसका वास है। यजुर्वेद (40/1) में कहा है— **'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्'** अर्थात् जो कुछ इस नाशवान् संसार में खण्ड या अखण्ड पदार्थ हैं, वे सब ईश्वर से व्याप्त और ईश्वर से आवासित हुए हैं, अर्थात् परमेश्वर हर वस्तु में विद्यमान् है। पर्वत की कोई ऐसी गहरी गुफा नहीं है, कोई चोटी नहीं, समुद्र का कोई गहरे से गहरा तल नहीं जहाँ ईश्वर विद्यमान न हो। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, ग्रह, उपग्रह आदि जितने लोक-लोकान्तर हैं, सब स्थानों में ईश्वर विद्यमान है। मनुष्य ईश्वर से कहीं छिप नहीं सकता है, जिस प्रकार प्रत्येक वस्तु आकाश में है और प्रत्येक वस्तु के भीतर भी आकाश है, इसी प्रकार ईश्वर भी जगत् में ओतप्रोत हो रहा है। कोई वस्तु ऐसी नहीं है, जो ईश्वर में न हो और जिसमें ईश्वर न हो। इस सिद्धान्त के आचरण में आने से मनुष्य का हृदय लचीला हो जाता है। हृदय के लचीला होने के लिए दो बातों की आवश्यकता होती है। प्रथम वह निष्पाप हो, दूसरे उसमें प्रेम की मात्रा अधिकता से हो। ये दोनों बातें ईश्वर को सर्वव्यापक मानने से मनुष्य में आया करती हैं।

'जगत्' का अर्थ है 'गतिमान्'। संसार में सभी कुछ गतिमान् है। सूर्य, पृथ्वी, चन्द्र, नक्षत्र आदि सभी गतिमान् हैं, इनके एक-एक कण में गति है। तो क्या गति यूं ही हो रही है? नहीं, इस गति को कोई देने वाला है, कोई 'ईश'

है अर्थात् कोई स्वामी है। वह स्वामी कहीं अलग बैठा गति नहीं दे रहा, वह गति करने वाला अणु-अणु में विद्यमान है। जब वह एक-एक अणु में बसा हुआ है और 'ईश'-'स्वामी' के कारण बसा हुआ है, तब तो यह सब उसी का है, हमारा क्या है ? मनुष्य यदि यह धारणा कर ले तो वह पापाचरण कभी नहीं करेगा।

मनुष्य पापाचरण के लिए सदैव एकान्त की खोज किया करता है, परन्तु ईश्वर का विश्वास होने पर पापाचरण के लिए एकान्त स्थान मिल ही नहीं सकता। जब तक मनुष्य के हृदय में नास्तिकता न आये तब तक वह पाप नहीं करता। इसलिए ईश्वर के सर्वव्यापकत्व पर विश्वास होने पर ही मनुष्य निष्पाप हो जाता है, आस्तिक हो जाता है। जब मनुष्य ईश्वर को सर्वव्यापक मानेगा तो वह प्रत्येक प्राणी में ईश्वर की सत्ता स्वीकार करेगा तब वह प्रत्येक प्राणी चाहे वह उत्तम हो या निकृष्ट, किसी से भी घृणा नहीं करेगा। घृणा भी नास्तिकता से उत्पन्न होती है। जिससे कोई घृणा करेगा, अवश्य उसमें ईश्वर की सत्ता का अभाव मानेगा। इसी का नाम नास्तिकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि निष्पापता और प्रेम से मनुष्यों के हृदयों में लचीलापन (कठोरता, घृणा का अभाव) आया करता है और इन साधनों की प्राप्ति ईश्वर के व्यापकत्व पर विश्वास होने से ही हुआ करती है।

जो लोग ईश्वर की आज्ञा के विरुद्ध चलते हैं अर्थात् ईश्वर को सर्वव्यापक नहीं मानते, वे पाप करते रहते हैं और जन्म-मरण के दुःखों को भोगते रहते हैं। अतः प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि ईश्वर को कण-कण में बसा मानकर और इसके विपरीत होना मानने को दुःखों का मूल समझकर, पाप करने के लिए कभी भी तैयार नहीं होना चाहिए।

जो ईश्वर को **'स पर्यगात्'** ऐसा मानेगा, वह इधर-उधर नहीं भटकेगा। चित्त की वृत्तियों को सभी बुराइयों से हटाके शुभगुणों में स्थिर करके परमेश्वर का आश्रय प्राप्त कर मोक्ष को कहते हैं अर्थात् मन को दुरित-दुर्गुण से हटा लेने पर हम ही उस परमात्मा को देख, जान सकते हैं अन्यथा नहीं। ऋषि आगे लिखते हैं, ''जैसे शीत से आतुर पुरुष (मनुष्य) का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है, वैसे परमेश्वर के समीप होने से सब दोष छूटकर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश-जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इसलिए परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिये। इससे आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दुःख आने पर भी नहीं घबरायेगा और सबको सहन करेगा।'' (सत्यार्थप्रकाश, समुल्लास-7)

साधारणतया हम कई महापुरुषों को देखते हैं कि वे इस संसार को छोड़कर वनों में, गुफाओं में, कन्दराओं-उपत्यकाओं में, पर्वतों पर-जिन्हें संसार असार लगा, चले गये, वहीं वे जब ज्ञान, योग, समाधि को प्राप्त कर गये तो फिर लौट आये, जगत् में और उद्घोषणा की कि पहले हम सोचते थे कि संसार बाधा है, जगत् की वस्तुएं बांधती हैं, पर अब सब स्पष्ट हो गया है-जब तक परमेश्वर के सर्वव्यापकत्व का ज्ञान नहीं था, तब तक ही संसार काट खाने को दौड़ता हुआ प्रतीत होता था और अब जबकि वह उपलब्ध हो गया तो संसार खो गया है। अब तो सर्वत्र वही है। उपनिषद्कार ने **'ईशावास्यमिदं सर्वम्'** की घोषणा की और वेद ने **'तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः'** उस सर्वव्यापी विष्णु के परमपद को ज्ञानीजन ही सदा देखते हैं, प्रत्यक्ष करते हैं।

मुण्डकोपनिषद् (2/2/8) में कहा है—

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे॥

(तस्मिन्) उस (परावरे) सूक्ष्म और महान् (ईश्वर) को (दृष्टे) देख या जान लेने पर (हृदयग्रन्थिः) हृदय की गांठ अर्थात् बन्धन का हेतु वासना (भिद्यते) खुल जाती है, (सर्वसंशया) समस्त संशय (छिद्यन्ते) नष्ट हो जाते हैं (च) और (अस्य) इस मुमुक्षु के (कर्माणि) समस्त वासना पैदा करने वाले सकाम कर्म (क्षीयन्ते) क्षीण हो जाते हैं अर्थात् जब कोई पुरुष इन्द्रियों के अनुभव न होने योग्य परमात्मा को भीतर ज्ञान-चक्षु से देख लेता है, तब उसके हृदय की गांठे अर्थात् सूक्ष्म शरीर का सम्बन्ध टूट जाता है। सन्देहों का सम्बन्ध मन से है मन का सूक्ष्म शरीर से। जब सूक्ष्म शरीर ही न रहा तो मन कहाँ? जब मन ही नहीं तो उसमें उत्पन्न होने वाले संदेह कहाँ? जब सम्पूर्ण सन्देह दूर हो जाते हैं और जब मन ही नहीं रहता, फिर सब कर्मों के संस्कार रहते हैं तो उसमें रहने वाले कर्म किस प्रकार रह सकते हैं? उस ज्ञानी के सब कर्म नष्ट हो जाते हैं। **क्रमशः..**

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में उमड़ा जनसैलाब।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सभाप्रधान मा० रामपाल आर्य।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सभा मंत्री श्री उमेद सिंह शर्मा।

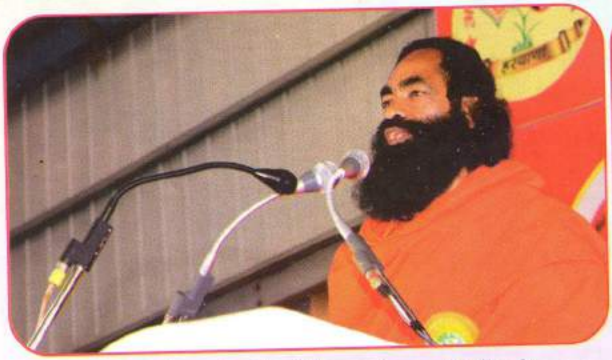

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में अपने विचार रखते हुए स्वामी धर्मदेव जी।

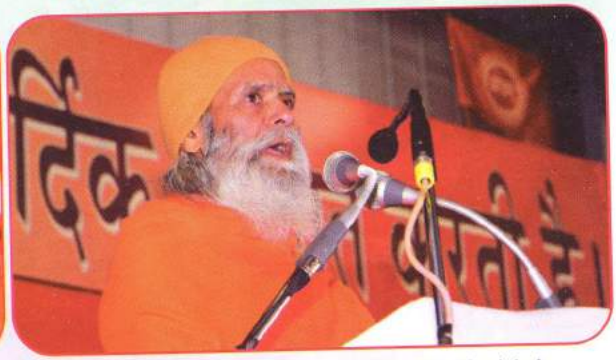

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में अपने विचार रखते हुए स्वामी विदेह योगी जी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में अपने विचार रखते हुए आचार्य ऋषिपाल जी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में अपने विचार रखते हुए मंत्री दिल्ली सभा श्री विनय आर्य जी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में अपने विचार रखते हुए डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में अपने विचार रखते हुए आचार्य सामदेव जी।

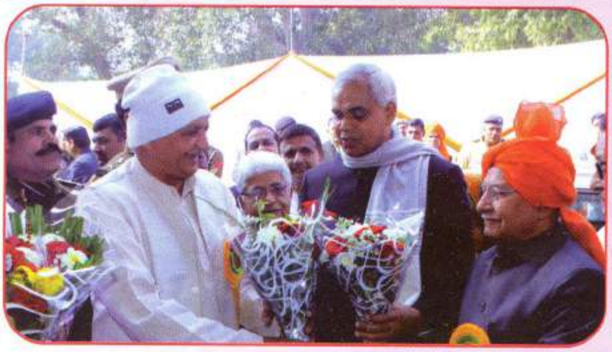

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में पधारने पर महामहिम राज्यपाल गुजरात आचार्य देवव्रत जी का फूल भेंट कर स्वागत करते हुए सभाप्रधान।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में पधारने पर महामहिम महिला राज्यपाल गुजरात का फूल भेंट कर स्वागत करते हुए सभाकोषाध्यक्ष।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में पधारने पर माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहरलाल जी का फूल भेंट कर स्वागत करते हुए सभामंत्री।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में परस्पर अभिवादन करते हुए महामहिम राज्यपाल गुजरात अचार्य देवव्रत जी एवम् माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहरलाल जी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में महामहिम राज्यपाल गुजरात आचार्य देवव्रत जी का सम्मान करते हुए सभापदाधिकारीगण।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में महामहिम महिला राज्यपाल गुजरात का सम्मान करते हुए सभापदाधिकारीगण।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में माननीय मुख्यमंत्री हरियाणा श्री मनोहरलाल जी का सम्मान करते हुए सभापदाधिकारीगण।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में मंच की शोभा बढ़ाते हुए महामहिम राज्यपाल गुजरात साथ में सभा पदाधिकारीगण।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती को तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव विद्वत् सम्मान एवम् प्रशस्ति पत्र से सम्मानित करते हुए महामहिम राज्यपाल गुजरात आचार्य देवव्रत जी एवम् सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य जी।

डॉ आचार्य यज्ञदेव याज्ञिक को तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव विद्वत् सम्मान एवम् प्रशस्ति पत्र से सम्मानित करते हुए महामहिम राज्यपाल गुजरात आचार्य देवव्रत जी, माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहरलाल जी एवम् सभापदाधिकारीगण।

तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव विद्वत् सम्मान एवम् प्रशस्ति पत्र से सम्मानित व्यक्तित्व

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में स्वामी सुखानन्द जी (राजस्थान) का सम्मान करते हुए सभापदाधिकारीगण।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में वैद्य दयानन्द गिरी (भिवानी) का सम्मान करते हुए सभापदाधिकारीगण।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में श्री धर्मपाल आर्य का सम्मान करते हुए महामहिम राज्यपाल गुजरात एवम् सभापदाधिकारीगण।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में श्री विनय आर्य का सम्मान करते हुए महामहिम राज्यपाल गुजरात एवम् सभापदाधिकारीगण।

आवाज दो आर्य एक हों

☐ डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा, मो० 8979794715

महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक भारत के चिन्तक थे। समाज-सुधार में इनका सबसे अधिक योगदान रहा। बालविवाह, विधवा का पुनर्विवाह, सतीप्रथा, फलित ज्योतिष,

जादू-टोने, तान्त्रिक कर्म, मृतकभोज, तथा अनेक कुरीति, अन्धविश्वास, पाखण्डों पर विचार रखकर समाज को नई दिशा देने का कार्य किया। वेदों के प्रचार हेतु सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। आर्यसमाजों की स्थापना की, स्वराज के विषय में सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही विचार दिया। हरिद्वार में क्रान्तिकारियों कुंवरसिंह, तात्यां टोपे, नाना फड़नवीस, अजीमुल्ला खां, झांसी की रानी जैसे क्रान्तिकारियों के हृदय में क्रान्ति की मशाल प्रज्वलित करने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे। सरदार अर्जुनसिंह महर्षि दयानन्द सरस्वती के समय में आर्यसमाजी थे जिनकी तीसरी पीढ़ी अर्थात् भगतसिंह देश पर बलिदान हो गए थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का देश व समाज को नई दिशा व दशा देने में बहुत ही बड़ा योगदान है। महर्षि दयानन्द सरस्वती का बाल्यकाल का नाम मूलशंकर था। इनके पिता करसन जी लाल त्रिवेदी औदीच्य ब्राह्मण थे तथा जागीरदार थे। मूलशंकर का जन्म सन् 1824 को गुजरात के टंकारा में हुआ था।

मूलशंकर पर बाल्यकाल में ही माता-पिता से धार्मिक प्रभाव पड़ा पिता पुत्र को पुराण आदि पौराणिक पुस्तकों की कथा सुनाया करते थे। वेद व संस्कृत पढ़ाते थे। मूलशंकर जब 14 वर्ष का हुआ तब पिता ने शिव की महिमा के विषय में बताया। महाशिवरात्रि पौराणिकों का शैवमत मानने वालों का बड़ा पर्व माना जाता है। इसमें व्रत (उपवास) रखते व शिवलिङ्ग पर जलाभिषेक करते हैं। पिता के आदेश पर मूलशंकर ने भी व्रत रखा व पूरी रात्रि भर जागता रहा। जब निद्रा आती मुख पर पानी के छींटे मार लेता। अर्द्धरात्रि बीत जाने पर वहां एक के बाद एक कई चूहे आए और शिवलिङ्ग पर चढ़े नैवेद्य को खाकर उस पर ही उछल-कूद करने लगे। मूलशंकर ने यह दृश्य आंखों से देखा तो आश्चर्य चकित रह गये। सोचने लगे कि पिता जी तो हते थे यह त्रिशूलधारी शिव संसार की रक्षा करने वाला है यह कैसा शिव है जो चूहों से भी अपनी रक्षा नहीं कर पा रहा है। उसका मन मूर्तिपूजा से हट गया और सोचने लगा कि यह वह शिव नहीं हो सकता। पिता जी से पूछा तो उत्तर मिला कि कलयुग में शिव की मूर्ति की ही पूजा करनी पड़ती है। वह शिव तो कैलाश पर रहता है बालक को इन बातों से सन्तुष्टि नहीं हुई।

यह प्रश्न बालक के मन में उठते रहे। कई स्थानों पर शंका का समाधान करना चाहा परन्तु सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिला। एक दिन मूलशंकर ने अपना घर छोड़ दिया। मन्दिर, मठ, आश्रम, पण्डे-पुजारी आदि के पास गया। अन्त में मथुरा में स्वामी विरजानन्द दण्डी की कुटिया पर पहुँच गया। वहाँ जाकर आवाज दी अन्दर से पूछा, कौन? मूलशंकर (दयानन्द) ने कहा कि यही जानने आया हूँ कि मैं कौन हूँ? यह सुनकर दण्डी स्वामी ने योग्य जानकर दयानन्द को अपना शिष्य बना लिया और अनार्ष ग्रन्थों को यमुना में बहा देने के लिए कहा। यदि दयानन्द बाद में महर्षि दयानन्द सरस्वती बन विश्व में वेदों का प्रकाश करने वाले प्रसिद्ध हुए।

आज हम महर्षि दयानन्द को याद करते हैं, पर्वों पर भव्य शोभायात्राएं निकालते हैं, कार्यक्रम आयोजित करते हैं, अच्छी बात है, परन्तु हमें वेदप्रचार के रास्ते में यह भी ध्यान रखना होगा कि हमारा संगठन पौराणिकों सहित एक व दृढ़ हो, हम मजबूत हों, संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। अर्थात् जो ऋग्वेद के दशम मण्डल में संगठन सूत्र है उसका दृढ़ता से पालन करें तभी ऋषि का कार्य सफल हो सकेगा, भारत उन्नति के रास्ते पर चल सकेगा, ओ३म् ध्वज गगन में लगा सकेगा। हम आर्यजन आज अलग-

क्रमशः पृष्ठ 11 पर......

आत्मबोध ही आत्मसुख का मार्ग है

❑ पण्डित उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायाऽमृत यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

यजु. 25-93

जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर, आत्मा और समाज के बल का देनेहारा जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसका प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन, न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसका आश्रय ही सुखदायक है, जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुःख का हेतु है। हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देने हारे परमात्मा की प्राप्ति के लिये आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति अर्थात् उसी के आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें।

परमात्मा किसे कहते हैं? परमात्मा उसे नहीं कहते जो कभी है और कभी न हो। परमात्मा सदैव है। पहले भी थे, अब भी हैं और आगे भी रहेंगे। परमात्मा उसे भी नहीं कहते जो कहीं हो और कहीं न हो। परमात्मा सर्वत्र, सर्वकाल और सर्वव्यापक है। परमात्मा उसे भी नहीं कहते जो किसी का हो और किसी का न हो वह सबका है, सबका होने से आपका भी है। परमात्मा सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम सर्वाधारसर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता हैं। अर्थात् वह सब प्राणिमात्र का है। आपका परमात्मा आप में मौजूद है। यदि यह बात आपकी आत्मा में ठीक से बैठ जाए तो आपको बड़ी शान्ति मिलेगी और हदय आनन्द से भर जायेगा। आप निर्भय और निश्चिन्त होकर रहेंगे। शरीर से असंगता होते ही दृष्टि और दृश्य दोनों से एकदम सम्बन्ध छूट जाता है। केवल एक आनन्दमय स्वतन्त्र अस्तित्व रह जाता है। वहाँ न स्थान है, न काल है। आपका अस्तित्व शरीर और संसार से परे है। शरीर तो साधन सामग्री है, भोग सामग्री नहीं है। यदि शरीर को परमात्मा की धरोहर मान लें तो मानव जीवन में सदैव आनन्द ही आनन्द रहेगा।

मार्गदर्शक आत्मा-मनुष्य की आत्मा सच्चे गुरु की तरह होती है जो उसे सही मार्ग दिखाती है। यह आत्मा वह दीपक है जो इसे इस जीवन की सच्चाई को दिखा सकता है। बस देर है तो उसे पहचानने की, जैसे मृग कस्तूरी के लिये भटकता है पर वह उसके पास होती है। इसी प्रकार मनुष्य अपने भीतर विद्यमान अपनी आत्मा को पहचान ले तो उसे किसी की जरूरत नहीं। मनुष्य जब गलत कार्य करता है तो उसकी आत्मा उसे रोकती है, वह उस आवाज को नहीं सुनता और उसे होश तब आता है, जब वह सब गंवा चुका होता है। आत्मा ही परमात्मा की आवाज होती है। जो आत्मा की आवाज सुन लेते हैं महान् बन जाते हैं। मनुष्य को अपनी आत्मा को पहचानने का प्रयास करना चाहिए। आत्मा जब किसी कार्य को करने मे हिचके तो वह कार्य नहीं करना चाहिए। आत्मा की आवाज न सुनने का कारण है। हमारा शरीर मन्दिर है, जिसमें आत्मा रहती है, जो परमात्मा की प्रतिनिधि हैं। बस आत्मा आवाज अर्थात संकेत सुनने की क्षमता चाहिए।

विचारों की साथर्कता-विचारों की सार्थकता बनाने के लिये प्रत्येक मानव का कर्तव्य है कि समझ-बूझकर सीमित और शुभ शब्दों का प्रयोग व्यवहार में लाए जिससे वायुमण्डल प्रदूषित न हो। वायुमण्डल में घूमने वाले एक-एक शब्द प्रतिध्वनि स्वरूप गूंजते हैं। वायुमण्डल में सत्य और असत्य के दोनों शब्द अपना प्रभाव छोडते हैं। यह सृष्टि लोकव्यवहार है, इसलिए हमें सदैव शुभ, सत्य, अन्धविश्वास रहित व परोपकारी शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए। यह शान्तिमय जीवन निर्वाह कीं शैली है। हम उसे जानने की चेष्ठा करें या न करें पर उस आकाश ब्रह्मरूपी भीतर की सुई हमेशा घूमती रहती है और शब्दों को अंकों से परिवर्तित करती रहती है। इस नियम को मिटाया नहीं जा सकता है। हमें एक-एक शब्द का मनन करते हुये उच्चारण में लाना चाहिए जिससे सार्थक बने निरर्थक नहीं।

संकल्पशक्ति-संकल्प शब्द की गरिमा हदय की इच्छा से है। इसका सम्बन्ध शरीर से नही आत्मा से है। संकल्प का शाब्दिक अर्थ है शुभ वेदानुकूल ईश्वर परक विचारों का पक्का इरादा। इसके लिये हमें अपना आत्मबल विकसित करना होगा। कमजोर मन वाले व्यक्ति का आत्मबल भी कमजोर होगा। आध्यात्मिक, सामाजिक, परिवारिक या व्यक्तिगत सफलता के लिये सत्य संकल्प

शक्ति की आवश्यकता पड़ती है। इसके बिना किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिये आदर्श संकल्प की आवश्यकता पड़ती है। सामूहिक संकल्पों की शक्ति से महान् कार्य सफल हुये हैं। आज के युग में ऐसे संकल्पवान् व्यक्तियों की समाज में अति आवश्यकता है। जो भागीरथ के भाँति मजबूत निश्चयी होकर समाज की जरूरतों को पूरा कर सके।

वाणी और कर्म-ऋतस्य पंथा न तरति दूष्कृतः-बुरे कर्म करने वाले सत्य मार्ग को पार नहीं कर सकते। ऋग्वेद यह कहता है कि सत्यपथगामी के लिये सत्य बोलना और सत्कर्म करना कितना अनिवार्य है। सत्य से उत्तम कोई धर्म नहीं है। मनु ने उचित ही कहा है हमारे किसी भी कथन की सार्थकता तब है जब हमारे कर्मों और वाणी के अनुरूप हों ईश्वरभक्त को भक्ति करते हुये सत्कर्म करने वाला भी होना चाहिए। जब कोई मन-वचन-कर्म से शुद्ध हो जाता है, तो वह देवत्व की ओर बढ़ने लगता है। यदि वाणी शुभ है तो यह परमावश्यक है मन और कर्म भी शुद्ध हैं। यह जगत तथोभूमि व कर्मभूमि भी है। हम प्रत्येक क्षेत्र में सत्य से विमुख न हो। वेदों में इसलिये प्रार्थना की गई है कि मेरी प्रवृत्ति मधुमय हो, मेरी निवृत्ति मधुमय हो, मैं मधुरता से युक्त मधुर वाणी बोलूं।

आत्मबोध-जिस दिन हमें ईश्वर, संसार और आत्मा और मानव शरीर के सम्बन्धों की गरिमा का ज्ञान होगा उस दिन हमें अपने जीवन की वास्तविकता का बोध हो जायेगा, क्योंकि ईश्वर, संसार आस्था और मानव जीवन का आपस में अन्योन्यनित सम्बन्ध है। एक के बिना दूसरे की गणना नहीं की जा सकती। यदि हम शरीर का ही• ध्यान करें तो समाज से कट जायेंगे यही स्थिति आत्मा और परमात्मा की भी है। आत्मा परमात्मा का प्रतिनिधि है। अतः आत्मा निरन्तर परमात्मा में लीन होने की दिशा में अग्रसर करती है। अंतिम किरण परमात्मा मिलन व मोक्ष है। इसके लिये सतत् प्रभुस्मरण, सेवाभाव, संयम, सदाचार, आदि ऐसे सद्गुण हैं जो हमें आत्म बोध के मार्ग पर ले जाते हैं। जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त करता है आत्मबोध। हम इस सत्य को जाने और जीवन को सार्थक करें।

सम्पर्क-गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
मो० 9411512019, 9557641800

आवाज दो आर्य एक हों..... पृष्ठ 9 का शेष.....

थलग हो रहे हैं। उसमें भी छद्मचरों की घुसपैठ हो रही है। ऐसे लोग मात्र दिखावा करते हैं, श्रद्धा नहीं है। ऋषि दयानन्द की संस्थाओं पर कुण्डली मारकर बैठ गए हैं, स्वयं देख लें। आर्यसमाज बन्द पड़े हैं, अनेक स्थानों पर आर्यसंस्थाओं में ताले लटके हैं। कार्यक्रम होते नहीं यदि होते भी हैं तो मात्र खानापूर्ति होती है। एक ओर दूध पीने वाले दूसरी ओर खून देने वाले मजनूं की भाति कार्य हो रहा है। आर्यसमाजों को आजीविका का साधन बना लिया है।

आर्यसमाज का संगठनात्मक स्वरूप एक होना आज अत्यधिक आवश्यक है। अलग-अलग संगठन चलाकर कुछ भी होने वाला नहीं है, क्योंकि देश आज देशी अर्थात् आन्तरिक रूप से अनेक जयचन्दों से घिरा हुआ है। उधर आतंकवाद और टुकड़े-टुकड़े गैंग, आजादी मांगे गैंग, पत्थर मार गैंग, लव जिहाद व बलात्कारी गैगों की ब्राढ़ आ रही है। इससे आर्यसमाज अलग-अलग रहकर नहीं निपट सकता।

एक विशाल मजबूत संगठन बनाकर चलना होगा तभी हम अपनी भावी पीढ़ियों का भविष्य उज्ज्वल बना सकते हैं, वरना आने वाली पीढ़ियों के सिर पर गोल जाली वाली टोपी लग जाएगी आज हम आप हैं तो कुछ कर भी सकते हैं, कल कुछ नहीं हो पाएगा। हमारी आने वाली पीढ़ियां हमें कोसती रहेंगी सब हाथ से निकल जाएगा।

कश्मीर से लाखों पण्डित 1990 में घरों से निकाल दिए सब जानते हैं। यहाँ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं, वही प्रक्रिया यहाँ भी आरम्भ हो चुकी है। भारत को तोडकर 1947 में दो पाकिस्तान बने थे, क्या हुआ सब लोग जानते हैं। क्या भविष्य के लिए आर्य अब भी आंखें मूंदकर बैठे रहेंगे। यदि एक हो जाएं, आवाज लगाएं, हम एक हैं यह भी काफी होगा। इजरायल छोटा-सा है परन्तु एक है, संगठित है। मुसलमानों के 50 देश चीन सहित उससे घबराते हैं। यह एकता बहादुरी की मिशाल प्रताप, शिवाजी जैसी ही है जो भारत में थी। आज आर्यो को एक होने की अति आवश्यकता है। तभी इन पर्वों की सार्थकता फलीभूत हो सकेगी।

ईश्वर ने संसार की रचना क्यों की?

❑ मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

हम इस संसार में उत्पन्न हुए हैं व वर्षों से रह रहे हैं। जन्म से पूर्व हम कहां थे, क्या करते थे, हम कुछ नहीं जानते हैं? इस जन्म से पूर्व की सभी बातों को हम भूल चुके हैं।

ऐसा होना स्वाभाविक ही है। हम बहुतसी बातों को जो कुछ मिनट या घंटों पहले हमारे जीवन में घटित होती हैं, उन्हें भी साथ-साथ भूलते जाते हैं। इसके कई उदाहरण दिये जा सकते हैं। हमने एक या आधा घंटे पहले किसी व्यक्ति से जो बातें की हैं उसको हम ठीक उसी क्रम में नहीं दोहरा सकते। उसका सार व विषय वस्तु तो हमें स्मरण रहती है परन्तु अपने व दूसरों के शब्दों व वाक्यों का क्रम हमें स्मरण नहीं रहता। हमने कल प्रातः से रात्रि तक जो-जो काम किये उनका क्रम भी हम भूल जाते हैं। कल हम किस-किस से मिले, किस रंग के वस्त्र धारण किये थे, किनके फोन आये व किनको फोन किये, उनसे कितनी देर क्या बातें की, क्या-क्या पदार्थ भोजन व प्रातराश में खाये, कहां-कहां गये, हमने क्या-क्या दृश्य देखे, इनमें से अधिकांश बातें हम भूल जाते हैं। इसी प्रकार अपने इस जीवन की भी अधिकांश बातों जो महीनों व वर्षों पूर्व घटित हुई है, जिन्हें हम स्वीकार करते हैं, परन्तु उनका पूरा-पूरा विवरण हम भूल जाते हैं। इसी प्रकार हमें अपने पूर्वजन्मों की बातें स्मरण नहीं हैं। इस स्थिति में हम यह नहीं मान सकते कि हमारा पूर्वजन्म था ही नहीं।

अपने पूर्वजन्म में हम मनुष्य योनि में भी रहे हो सकते हैं और किसी अन्य प्राणी योनि जैसी की हम संसार में गाय, बैल, कुत्ता, बिल्ली व अनेक प्रकार के पक्षियों आदि की योनियां हैं। यदि हम पशु रहे होंगे तो हमें स्मरण होना सम्भव नहीं है। यदि मनुष्य रहे होंगे तो मृत्यु ने हमारे पुराने शरीर जिसमें हमारे शरीर के मन, मस्तिष्क, बुद्धि, चित्त आदि करण व अवयव थे, वह जलकर नष्ट हो गये। अतः पुराने शरीर व उसके करणों में विद्यमान स्मृतियों को स्मरण करना ज्ञान-विज्ञान व बुद्धि के आधार पर सम्भव नहीं हो सकता। पूर्वजन्मों की स्मृतियों का स्मरण न रहने से हमें लाभ ही है। यदि हमें वह सभी बातें स्मरण हों तो फिर हम इस जन्म को सुचारु व सुगमता से व्यतीत नहीं कर सकते। इस जन्म में भी हमारे जो दुःखद क्षण बीते होते हैं, उनकी स्मृतियां हमें जीवन भर दुःख देती हैं। अतः यदि हमें अपने पूर्वजन्मों की स्मृतियां रहती तो हम उनमें ही खोये रहते और दुःखी होते रहते जिससे हमारा यह जन्म व इसके बाद के भी जन्म कष्टप्रद होते। ईश्वर की यह महती कृपा है कि उसने हमें पुरानी बातों की स्मृतियां न होने दी अन्यथा हम ईश्वर से इसकी शिकायत करते। वर्तमान जीवन में हम पुरानी बातों को भूलकर नये तरह से जीवन व्यतीत करते हैं। हमारे पास माता-पिता व आचार्यों की शिक्षाओं के साथ ईश्वर प्रदत्त वेदज्ञान एवं ऋषियों के बनाये सत्य ज्ञान की पुस्तकें उपनिषद्, दर्शन, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एवं आर्य विद्वानों के वेदभाष्य आदि अनेकानेक ग्रन्थ हैं। जिनसे हमारा मार्गदर्शन होता है और हमारा जीवन सुखपूर्वक उन्नति करते हुए व्यतीत होता है। हम एक साधारण बालक से महापुरुष तक बन सकते हैं। यह सब हमारी बुद्धि व ज्ञान सहित हमारे सत्कर्मों एवं पुरुषार्थ पर निर्भर करता है। अतः हम ईश्वर के ऋणी हैं। हमें उसका प्रतिदिन अनेक बार धन्यवाद करना चाहिये। उस परमात्मा ने हमें जो मानव शरीर वा मानव जीवन तथा यह संसार बनाकर दिया है उसके लिये हम उसके ऋण से कभी अनृण नहीं हो सकते।

यह संसार ईश्वरकृत रचना है। ईश्वर के अतिरिक्त संसार में ऐसी कोई शक्ति व सत्ता का अस्तित्व नहीं है जो संसार की रचना कर सके। बिना चेतन सत्ता, जिसमें बुद्धि और कर्म करने की शक्ति हो, वही बुद्धिपूर्वक, प्रयोजन सिद्ध करने वाली व विलक्षण रचना को कर सकती है। सृष्टि स्वतः बन गई, यह विद्वानों का सिद्धान्त नहीं है। मनुष्य स्वयं अपने जन्म व पालन आदि अस्तित्व के लिये अपने माता-पिता तथा आचार्यों एवं मित्रादि सहित परमात्मा पर ही निर्भर है। यदि परमात्मा जीवात्मा को मनुष्य आदि योनियों में से किसी एक में जन्म न दे, तो वह स्वतः व स्वयं जन्म को प्राप्त नहीं हो सकती। हमने यह जो बातें लिखी हैं उस पर हमारे दर्शनकारों ने विचार व चिन्तन किया है। उसी का निष्कर्ष है कि मनुष्य सृष्टि की रचना नहीं कर सकता और ईश्वर के अतिरिक्त संसार में सृष्टि-रचना करने में समर्थ अन्य कोई सत्ता है ही नहीं। ईश्वर के अस्तित्व को भी हमारे दर्शनकारों ने युक्ति एवं तर्क

से सिद्ध किया है। कार्य-कारण के सिद्धान्त के आधार पर इस सृष्टि का निमित्त कारण परमात्मा ही सिद्ध होता है। प्रकृति सृष्टि का उपादान कारण सिद्ध होती है। ईश्वर के अस्तित्व का एक प्रमाण सभी प्राणी प्रतिदिन अनुभव करते हैं। वह यह है कि हमारी आत्मा के भीतर सत्कर्मों परोपकार व पुण्य कर्मों को करने में जो प्रेरणा, उत्साह, नि:शंकता होती है और अशुभ व पाप कर्मों को करने में जो भय, शंका व लज्जा आत्मा में उत्पन्न होती है उसका कारण परमात्मा की आत्मा में प्रेरणा ही होती है। इनका अन्य कोई कारण नहीं होता। यह ईश्वर का प्रत्यक्ष प्रमाण है। कार्य को देखकर कर्ता का ज्ञान होता है। इस सृष्टि और इसमें रचना विशेष पदार्थों को देखकर इनके रचयिता परमात्मा का ही ज्ञान होता है। यह भी ईश्वर का प्रत्यक्ष ही है।

अत: यह संसार सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनादि, अनन्त, अनुपम, सर्वाधार, सर्वव्यापक, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी, नित्य सत्तावान परमेश्वर से ही अस्तित्व में आया है। सृष्टि रचना विषयक दार्शनिक विश्लेषण को दर्शन ग्रन्थों में पढ़ना चाहिये जो किसी भी मनुष्य की पूर्ण सन्तुष्टि करने में समर्थ हैं। हमारे देश में भी वैज्ञानिक हुए हैं। आर्यसमाज में भी विज्ञान से जुड़े अनेक प्रतिष्ठित विद्वान् व वैज्ञानिक हुए हैं। वह सब वेद एवं दर्शनों के आधार पर सृष्टि को अपौरुषेय अर्थात् ईश्वर से उत्पन्न एवं पालित मानते रहे हैं। हमारे ऋषि भी वैज्ञानिक ही होते थे। वह भी सृष्टि की रचना ईश्वर से होना मानते थे। यही एकमात्र युक्ति एवं तर्कसंगत सिद्धान्त है। इसमें किसी को शंका नहीं करनी चाहिये। इसका अन्य कोई समाधान भी नहीं है। संक्षेप में यही कह सकते हैं कि इस विशाल एवं अनन्तहीन सृष्टि की रचना स्वमेव नहीं हो सकती। मनुष्य व जीवात्माओं को सृष्टि रचना का ज्ञान नहीं है। आज देश के सभी वैज्ञानिक मिलकर भी मनुष्य व उसके शरीर के एक अवयव को भी नहीं बना सकते। वह एक पशु व पक्षी को भी नहीं बना सकते। इन सबका आधार परमात्मा ही है।

हमारी समस्त सृष्टि परमाणुओं से मिलकर बनी है। वैज्ञानिक भिन्न तत्त्वों के परमाणुओं को पृथक्-पृथक् नहीं कर सकते और न ही परमाणुओं को भी बना ही सकते हैं। सभी वैज्ञानिक मिलकर संसार में विभिन्न तत्त्वों के परमाणुओं को किंचित् नियंत्रित नहीं कर सकते हैं। अत: सृष्टि को ईश्वरकृत मानना ही सत्य एवं उचित है। ईश्वर का ज्ञान वेद है। यह वेदज्ञान सृष्टि के अनुरूप व अनुकूल है। वेदों पर सत्य व्याख्यान ऋषि दयानन्द व आर्य विद्वानों के उपलब्ध हैं। हमें वेदों का अध्ययन करना चाहिये। वेदों से ईश्वर का सत्यस्वरूप उपलब्ध होता। मनुष्यकृत किसी धार्मिक आद्याचार्य व आचार्य के किसी ग्रन्थ व संकलन में सृष्टि की रचना, रचना का प्रयोजन एवं इससे जुड़े प्रश्नों का भ्रान्तिरहित समाधान नहीं मिलता। वेद वा दर्शन ग्रन्थों में सृष्टि रचना संबंधी सभी प्रश्नों के सटीक व समुचित उत्तर मिलते हैं। इनका प्रकाश ऋषि दयानन्द ने अपने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के आठवें समुल्लास में किया है। जिज्ञासु मनुष्य व विद्वानों को सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ एवं तत्पश्चात् दर्शन ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिये। ऋग्वेद का दसवें मण्डल का नासदीय सूक्त जो सृष्टि रचना विषयक ज्ञान विज्ञान से युक्त है, उसका भी अध्ययन विद्वानों को करना चाहिये। इससे उनकी भ्रान्तियां दूर हो सकती हैं। यहां यह बता दें कि परमात्मा ने इस सृष्टि को उपादान कारण त्रिगुणात्मक सूक्ष्म जड़ प्रकृति से बनाया है। प्रकृति ईश्वर की तरह से ही अनादि व नित्य है। अनादि व नित्य पदार्थों का कदापि अभाव नहीं होता है। उनके स्वरूप में परवर्तन होता है जिसे अवस्थान्तर कहते हैं। अवस्थान्तर की स्थिति न रहने पर वह अपने मूलस्वरूप में आ जाते हैं। प्रकृति भी प्रलय अवस्था व सृष्टि की रचना से पूर्व तक त्रिगुणात्मक सत्व रज व तम गुणों की साम्यावस्था में रहती है।

ईश्वर ने सृष्टि की रचना क्यों की? इसका उत्तर जानने के लिये यह जानना आवश्यक है कि संसार में तीन अनादि, नित्य, अविनाशी व अमर पदार्थ वा सत्तायें हैं। यह हैं ईश्वर, जीव तथा प्रकृति। जीव एक सूक्ष्म, नित्य, अविनाशी, एकदेशी, ससीम, अल्पज्ञ गुणों वाला हैं। इनकी संख्या अनन्त व अगणनीय हैं। सभी जीव इस कल्प से पूर्व की सृष्टियों में भी मनुष्यादि नाना योनयों में अपने पूर्वजन्मों के कर्मों के अनुसार जन्म लेते रहे थे। सृष्टि को उत्पन्न कर परमात्मा इन सब जीवों के सुख व कल्याण के लिये उन्हें मनुष्यादि विभिन्न योनियों में जन्म देता है। इन जीवों के लिये ही परमात्मा ने इस सृष्टि को बनाया है व इसका संचालन कर रहा है। उसका इस सृष्टि को बनाने व चलाने में अपना कोई निजी हित व प्रयोजन नहीं है। उसको जीवों की प्रार्थना, स्तुति व उपासना की भी आवश्यकता नहीं है। उसने सृष्टि को इसलिये बनाया है जिससे सभी जीवों को अपने कर्मानुसार सुख व दु:खों की प्राप्ति व भोग प्राप्त हो सके। यदि वह ऐसा न करता तो यह सृष्टि

शेष पृष्ठ 15 पर....

सोया स्वाभिमान जगाया था

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

दिवंगत आर्यसमाज के तपःपूत स्वनामधन्य आचार्य बलदेव जी के कार्यकाल में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में

श्री यशविन्द्र जी भजनोपदेशक थे। यह अब गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। उस समय ये हमारे साथ रोहतक के आस-पास के गांव में प्रचार करते थे। इन्होंने एक स्वयं का भजन बनाया, जिसे प्रचार में बड़े चाव से गाते थे। मुझे यह भजन बड़ा रुचिकर लगता था। भजन की आरम्भिक पंक्तियां कुछ इस प्रकार थी—

एक योगी आया था, सारा देश बचाया था।
मुद्दत से जो सोये थे, उनको आन जगाया था॥

आर्यो! ऋषि जन्मोत्सव व ऋषि बोधोत्सव आ रहा है। धूमधाम से मनाना। केवल अपने समाज के अन्दर न मनाकर सड़कों, गलियों, चौपालों में मनाना। ऋषि जीवनी की कोई पुस्तक बांटना, ऋषि महिमा के जयकारे गुंजाना, गीत गुनगुनाना। ऋषि का जीवन तुम्हारा मन गुदगुदाता रहा, जब तक तुम उस जीवन से दूसरों का मन नहीं गुदगुदा पाओगे तो ऋषि ऋण कैसे चुका पाओगे? समाज के प्रत्येक वर्ग तक ऋषि का सन्देश पहुँचाकर स्वामी श्रद्धानन्द, पं० लेखराम, भक्त फूलसिंह जैसे वीरों ने यह ऋण चुकाया। ऋषि जी ने जो हमारा सोया स्वाभिमान जगाया वही उनका बहुत बड़ा ऋण है। स्वाभिमान के बिना हम उन्नति की अंगड़ाई नहीं ले सकते। सत्यार्थप्रकाश की भूमिका के अन्त में ऋषि जी इसे लिखने के स्थान का संकेत देते लिखते हैं—'महाराणा जी का उदयपुर'। जब मैंने एक बार इसका चिन्तन किया, तो ऋषि जी की राष्ट्रभक्ति व आर्यजाति के प्रति स्नेह को देखकर हृदय आनन्द व श्रद्धा से भर गया। मैं सोचता था कि मैंने ही ऐसा चिन्तन किया है। लेकिन बाद में इसी प्रसंग में महान् आर्यनेता लेखक दिवंगत श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय जी के एक लेख में यह प्रसंग पढ़कर तो स्वाभिमानयुक्त आनन्द की अनुभूति हुई। पाठकगण! जब आप अपने विचारों का समर्थन किसी महान् व्यक्तित्व के विचारों में तथ्यपरक पाते हो तो आपको कैसा आनन्द होता होगा? अभी लेख लिखते हुए भाव आया कि ऋषि जी हमें हमारा 'आर्य' नाम याद दिलाकर हमारा स्वाभिमान जगा गए। किसी ने कितना बढ़िया कहा है—

धन्य हो! महर्षि तूने हमें जगा दिया।
सो-सो के लुट रहे थे हम, तूने हमें बचा लिया॥

ऋषि का यही सन्देश था कि काम से गये, नाम से भी गये। आज 'राम' रटने वाले 'हिन्दू' स्वयं को आर्य कहने से क्यों झिझकते हैं? यही 'हिन्दूवादी' सोच इन्हें विवेकानन्द की तरह दयानन्द का नाम लेने से हटाती है, डराती है। दयानन्द जैसी इस्लाम व ईसाइयत की समीक्षा, आर्षग्रन्थों का ज्ञान-बखान, सन्ध्या-यज्ञ महिमा, स्वदेश-स्वदेशी भक्ति विवेकानन्द में कहाँ से लाओगे?

दयानन्द के नाम पर भी जिस दिन ये देशव्यापी बड़े-बड़े आयोजन करने लगेंगे उस दिन ये निश्चित ही राष्ट्र को एक सार्थक सन्देश दे पायेंगे, वरन् 'विवेकानन्द' और 'गीता' ये नाम मात्र ही गूंजते रहेंगे। धर्म की उलझन को, इतिहास में मिलावट व हटावट को दयानन्द से जुड़कर ही मिटा सकते हो। कभी पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति ने लिखा था कि पौराणिक काम तो आर्यसमाज वाले ही लेने लगे, केवल लेवल अपना लगा रखा है। काश! यह लेबल उतारकर ये 'आर्य' नाम धारण करते। आदरणीय योगी आदित्यनाथ के मुख्यमन्त्री बनने के कुछ दिन बाद उन्होंने टी.वी. पर एक साक्षात्कार में कहा कि मत-पंथ अनेक हो सकते हैं, धर्म तो एक ही है। एक प्रकार से उन्होंने ऋषि जी का आदर्श वाक्य दोहरा दिया। लेकिन बात फिर वही है कि हम नाम और काम दोनों को सत्य से स्वीकार करें। इस सत्य से जब तक समझौता होता रहेगा, ये उलझन मिटने वाली नहीं। ताज-तख्त के चाहने वाले यह सच नहीं अपना सकते। यह दयानन्द जैसे फकीर का कार्य है। 'सत्यार्थप्रकाश' के ग्यारहवें समुल्लास में आर्यावर्त के चक्रवर्ती सम्राटों का वर्णन, राजवंश का वर्णन, बेजोड़ शिल्पकला, अस्त्र-शस्त्रों का वर्णन, क्या स्वाभिमान नहीं जगाते? बनावटी धर्मग्रंथों की रचना का खण्डन, धर्मग्रन्थों में मिलावट व गलत व्याख्या का संशोधन कर न केवल विदेशी मिशनरियों का मुंह बन्द किया अपितु हमें भी गिरावट से बचा लिया। इसीलिए तो पंडित रामप्रसाद 'बिस्मिल' से लेकर वीर सावरकर तक सभी का प्रिय ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' रहा। शेष पृष्ठ 15 पर....

ईश्वर ने संसार की रचना.... पृष्ठ 13 का शेष...

अस्तित्व में न आती और जीवों को भी सुख व कल्याण की प्राप्ति न होती। उस स्थिति में ईश्वर के सर्वशक्तिमान्, न्यायाधीश, दयालु, सृष्टिकर्ता आदि अनेक गुण असत्य व कथनमात्र सिद्ध होते।

ईश्वर में सृष्टि को रचने की क्षमता व सामर्थ्य है इसलिये उसने अपनी अनादि प्रजा जीवों के लिये इस अपौरुषेय सृष्टि को बनाया है। ईश्वर ही सृष्टि का स्वामी, पिता व अधिष्ठाता है। सभी जीव ईश्वर के उपकारों से ऋणी हैं। ईश्वर के ऋण को धन्यवाद रूपी सन्ध्या, ध्यान व उपासना एवं अग्निहोत्र यज्ञ सहित परोपकार व दान आदि कर्मों को करके उतारने का प्रयत्न करना चाहिये। जो ऐसा नहीं करता वह कृतघ्न होता है। कृतघ्नता निन्दनीय होती है। ऐसे जीव अधम व निन्दनीय कोटि के होते हैं जो सत्य विधि से ईश्वर की उपासना न करें। ईश्वर की उपासना से आत्मबल मिलता है। ईश्वर के सान्निध्य में अलौकिक व अभौतिक आनन्द है जो अन्य किसी प्रकार से प्राप्त नहीं होता। ईश्वर को मानने व उपासना करने से वह हमारे सभी कार्यों में सहायक होता है और हमारे कार्यों एवं हमारी इच्छाओं, कामनाओं को पूरा करने सहित हमारा सर्वविध कल्याण करता है। इसी लिये वेद को मानने वाले वेद विधि से उपासना करते हैं। वेद विधि ही उपासना की एक मात्र सत्य विधि है। सभी मनुष्यों को वेद एवं ऋषियों की शरण में आना चाहिये। तभी वह ईश्वर के प्रति कृतघ्नता के दोष व पाप से बच सकते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि इस जन्म का अन्त मृत्यु पर होगा। मृत्यु के बाद प्रत्येक जीवात्मा का पुर्नजन्म होगा। वह जन्म हमारे इस जन्म के कर्मों एवं उपासना सहित परोपकार एवं दान आदि के कारण ही सुखमय व कल्याणप्रद हो सकता है अन्यथा अनेक नीच योनियों में से किसी एक योनि में हमारा जन्म होगा जहां अनेकानेक दु:ख उठाने होंगे। बुद्धिमानों को अधिक समझाने की आवश्यकता नहीं होती और निर्बुद्धि का काम अधिकांश स्थितियों में कुतर्क करना होता है। कुतर्क करने वालों को कोई समझा नहीं सकता। वह तो विद्या के वैरी होते हैं।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार-पत्र की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये।
सम्पर्क–मो० 08901387993

सोया स्वाभिमान जगाया.... पृष्ठ 14 का शेष...

आज जामिया मिलिया, शाहीन बाग में सी.ए.ए. का विरोध करने वाले लोग क्रान्तिकारियों की तस्वीर में 'बिस्मिल' की तस्वीर लगाए हैं। इनमें से कितनों को यह पता होगा कि 'बिस्मिल' जी मुसलमान बने व्यक्तियों की शुद्धि कर उन्हें वैदिक धर्म की दीक्षा देते थे? ये लोग छद्म रूप से शहीदों की तस्वीर लगाए हैं। वरन् इन तस्वीरों के आगे देश के विघटन की बात क्यों होती? क्या ये तस्वीर लगाकर सुभाष के चित्र के होते हुए आजाद हिन्दं फौज को भी भूल गए?

ऋषि जीवन का एक और प्रसंग मुझे बड़ा प्रेरणादायक लगता है। इस संदर्भ में उसे उद्धृत करना आवश्यक है। ऋषि जी नाविक, मल्लाह, नांई की रोटी स्वीकार करते हैं, लेकिन सर सैय्यद अहमद खां के भोजन निमंत्रण को स्वीकार नहीं करते। वे कहते हैं कि यद्यपि इसमें दोष नहीं, लेकिन ऐसा करने से देशवासियों में उनके प्रति अश्रद्धा हो जाएगी। आर्यजाति के कल्याण का चिन्तन ऋषि किस सीमा तक करते हैं, इससे आप अनुमान लगा सकते हैं। कहाँ तक लिखें? लगे रहो, जब तक जीवन है तब तक ऋषि का कार्य नए-नए ढंग से तुम्हें प्रेरणा देता रहेगा। यही तो पं० गुरुदत्त विद्यार्थी की भावनाएं थीं। हे परमात्मा! इस हेतु हमें बल दे। श्री शेरसिंह कार्यालयाधीक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कहने पर यह लेख लिखा। उनका धन्यवाद।

प्रेरक वचन

- सन्तुष्टि की अवस्था में व्यक्ति सदैव तनावमुक्त रहता है।
- शिक्षा में किया गया निवेश जीवन पर्यन्त लाभ देता है।
- पहले कार्य की योजना बनाएं फिर योजना अनुरूप कार्य करें।
- समय को बर्बाद करना अपने जीवन को बर्बाद करने के समान है।
- विनम्रता समस्त गुणों की आधारशिला है।
- साहित्य विचार और भाव का साझा अभिव्यक्ति है।
- जोखिम उठाए बिना सफलता संभव नहीं।

संकलन— भलेराम आर्य गांव-सांघी (रोहतक)

आर्यसमाज पिंजौर के संस्थापक धर्मपाल चौधरी का निधन

पिंजौर। आर्यसमाज पिंजौर के संस्थापक एवं प्रधान धर्मपाल चौधरी अब इस दुनिया में नहीं रहे। वह पिछले कई दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे, उनका निधन दिनांक 22 जनवरी 2020 को हो गया वह 78 वर्ष के थे वह अपने पीछे एक बेटा वकील देवव्रत चौधरी और परिवार को छोड़ गए हैं। पिंजौर रामबाग रोड श्मशान घाट में वीरेन्द्र आर्य द्वारा वैदिक रीति से दाह-संस्कार किया गया। इस मौके पर आर्यसमाज पिंजौर के पूर्व प्रधान आत्मप्रकाश आर्य ने बताया कि वह पिछले कई दिनों से अस्वस्थ थे उनकी हालत ठीक नहीं थी, उन्हें पंचकूला अस्पताल में भर्ती कराया गया था। उन्होंने कहा कि दिवंगत धर्मपाल चौधरी हर किसी के साथ दु:ख-सुख में साथ खड़े रहते थे और आज उनके चले जाने से ऐसा लग रहा है कि आर्यसमाज ने पिंजौर शहर का सबसे बड़ा पिलर खड़ा था गिर गया है। इस मौके पर यहाँ उनके छोटे भाई दिल्ली पुलिस से रिटायर्ड सब-इंस्पेक्टर ओमप्रकाश सहित भारी संख्या में गणमान्य लोगों ने अन्तिम यात्रा में साथ लिया आर्यसमाज के प्रधान धर्मपाल चौधरी पिंजौर आर्यसमाज के संस्थापक और कई बार प्रधान पद पर रह चुके थे। उनका एक बेटा देवव्रत चौधरी पेशे से वकील है और धर्मपाल चौधरी हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट में सुप्रीडेंट के पद पर रिटायर्ड हुए थे। उनके निधन से आर्यसमाज पिंजौर और कालका को गहरा धक्का लगा है। उनके निधन पर सभी ने गहरा दु:ख प्रकट किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा इनके निधन पर शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं व्यथित परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार पत्र में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

दिनांक 25 व 26 जनवरी को आर्यसमाज औरंगाबाद गोपालगढ़ जिला पलवल का द्वितीय वार्षिकोत्सव बी.जी. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय औरंगाबाद में बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें प्रधान श्री रामपाल आर्य व मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं परोपकारिणी सभा अजमेर से श्री कन्हैयालाल आर्य जी के पधारने पर श्री श्यामसिंह आर्य वेदनिपुण जी ने भव्य स्वागत किया तथा मन्त्री श्री बिशनसिंह आर्य जी ने मंच का संचालन किया एवं बाहर से पधारे सभी आर्यजनों का धन्यवाद किया। इस कार्यक्रम में मुख्यवक्ता श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री, स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा ब्रह्मा के रूप में पं० चन्द्रदेव शास्त्री जी ने भूमिका निभाई। भजनोपदेश श्री शंकर मित्र आर्य काशगंज (आशुकवि) ने तुरन्त बनाकर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान मा० रामपाल आर्य व श्री कन्हैयालाल आर्य पर स्वागत गीत गाया। उत्सव गणतन्त्र दिवस के अवसर पर श्री नरदेव बैनीवाल, श्री चतरसिंह आर्य एवं श्रीमती रेखा आर्या ने देशभक्ति से ओतप्रोत गीत एवं भजनों से लोगों का मन मोह लिया।

—मा० बिशनसिंह आर्य, मन्त्री

शोक-समाचार

(1) आर्यसमाज झोझूकलां जिला चरखी दादरी के प्रधान श्री रामकुमार आर्य के बड़े भाई श्री बलवीर आर्य जी का देहान्त दिनांक 26 जनवरी 2020 को हो गया है, वे 85 वर्ष के थे। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से 26 जनवरी 2020 को उनके पैतृक गाँव झोझूकलाँ जिला चरखी दादरी में कर दिया गया।

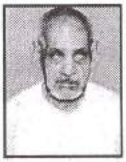

(2) आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की प्रतिनिधि श्रीमती वेदवती आर्या के बड़े भाई श्री हिन्दुराव आर्य (छिक्कारा) ग्राम खेड़ी आसरा जिला झज्जर का आकस्मिक निधन दिनांक 28.1.2020 को 90 वर्ष की आयु में होगया। आपका पूरा परिवार आर्यसमाज के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेता रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा इनके निधन पर शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं व्यथित परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में माननीय मुख्यमंत्री हरियाणा श्री मनोहरलाल जी से गुफ्तगू करते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में बुजर्गों का जोश भी देखते ही बनता था।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में मंच की शोभा बढ़ाते हुए गुरुकुलों की आचार्या।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में अपने मधुर भजन प्रस्तुत करते हुए बहन सुमित्रा आर्या।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में डॉ० अमरदेव विद्यार्थी का सम्मान करते हुए सभापदाधिकारीगण।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में स्वामी देवव्रत जी का सम्मान करते हुए सभापदाधिकारीगण।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में आचार्य वेदनिष्ठ जी का सम्मान करते हुए सभापदाधिकारीगण।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में चौ० सखीराम आर्य अनाथ आश्रम के बच्चों को स्वर्ण पदक पहनाकर सम्मानित करते हुए महामहिम राज्यपाल गुजरात।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

द्वारा आचार्य बलदेव जी की स्मृति पर आयोजित

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक 02 फरवरी 2020

को सफल बनाने के लिए आप सभी आर्यजनों का

हार्दिक धन्यवाद।

श्री ....

पता ....

....

प्रेषक : मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

– सम्पादक उमेद शर्मा